

राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर पीठ, जयपुर.

निर्णय

प्रभु दयाल, मोहन लाल, श्रीमती पप्पूडी बनाम राजस्थान राज्य

एकलपीठ दण्डिक अपील संख्या-329/2003
विरुद्ध सेशन केस संख्या 34/2002(12/2001)
में विद्वान अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश
(फास्ट ट्रेक) जयपुर जिला जयपुर
द्वारा पारित निर्णय दिनांक 13.2.2003

--

निर्णय दिनांक : 28 नवम्बर, 2006

:उपस्थित:

माननीय न्यायाधिपति श्री जितेन्द्र राय गोयल

श्री के ए खान, अधिवक्ता- अभियुक्त-अपीलार्थी की ओर से
श्री एम एल गोयल, विद्वान लोक अभियोजक वास्ते राज्य

--

अभियुक्त-अपीलार्थीगण प्रभु दयाल, मोहन लाल व श्रीमति पप्पूडी की ओर से यह आपराधिक अपील विद्वान अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश (फास्टट्रेक), जयपुर के द्वारा सेशन केस संख्या 34/2002(12/2001) में पारित आक्षेपित निर्णय एवं दण्डादेश दिनांक 13.2.2003 से व्यथित होकर प्रस्तुत की गयी है, जिसके अन्तर्गत उन्हें अन्वीक्षा के उपरान्त धारा 498-ए व 304-बी भारतीय दण्ड संहिता के अपराध का दोषी पाते हुए प्रत्येक को धारा 498-ए भारतीय दण्ड संहिता के अपराध में दो-दो वर्ष के कठोर कारावास से व 500- 500/- रुपये अर्थ दण्ड से तथा धारा 304-बी भारतीय दण्ड संहिता के अपराध के लिए 10-10 वर्ष के कठोर कारावास एवं 1000/- - 1000/- रुपये अर्थ दण्ड से दण्डित किया गया एवं अदम अदायगी अर्थ दण्ड 6-6 माह अतिरिक्त कारावास भुगतने के आदेश दिये।

अभियोजन मामले के अनुसार सुशीला का विवाह घटना के करीब डेढ़ वर्ष पूर्व मोहन लाल निवासी निवाणा नवी वाली ढाणी से हुआ

था। शादी के बाद से ही सुशीला को उसके ससुराल वाले दहेज की मांग को लेकर तंग व परेशान कर रहे थे। घटना की रात के लगभग 10 बजे सुशीला के माता-पिता के घर नारदपुरा में उसके ससुर प्रभु जी आये तथा यह बताया कि सुशीला बीमार है, जिसे अस्पताल लेकर आये हैं तथा साथ चलने के लिए कहा जिस पर सुशीला का भाई हनुमान अपने दूसरे भाई के साथ अस्पताल गया तो उनके अस्पताल पहुंचने तक सुशीला की मृत्यु हो चुकी थी। सुशीला को चोट मारकर उसके ससुर प्रभु जी, सास श्रीमति पप्पूड़ी व पति मोहन लाल द्वारा हत्या करना बताते हुए पी.डब्ल्यू.1 हनुमान द्वारा लिखित प्रथम सूचना रिपोर्ट प्रदर्श पी-1 पुलिस थाना-गोविन्दगढ़ में प्रस्तुत की जिस पर प्रथम सूचना रिपोर्ट अन्तर्गत धारा 304-बी भारतीय दण्ड संहिता दर्ज कर अन्वेषण प्रारम्भ किया गया।

अन्वेषण में मृतका सुशीला के शव का पंचायत नामा बनाया गया, घटनास्थल का निरीक्षण कर नक्शा मौका तैयार किया तथा मृतका की लाश का पोस्ट मार्टम करवाने के बाद उसके परिवारजन के सुपुर्द कर दिया गया। अभियुक्तगण को गिरफ्तार करके तथा औपचारिक अन्वेषण पूरा करने के बाद चार्ज शीट न्यायिक मजिस्ट्रेट, चौमू के न्यायालय में धारा 498-ए, व 304-बी भारतीय दण्ड संहिता अपराध के संदर्भ में प्रस्तुत की गयी जहां से सेशन न्यायालय जयपुर जिला जयपुर में उपापित होने के बाद अन्वीक्षा हेतु अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश, फास्ट ट्रेक, जिला जयपुर के न्यायालय को अन्तरित किया गया।

उभय पक्ष की आरोप विरचित किये जाने के संदर्भ में बहस सुनी जाकर अभियुक्तगण के विरुद्ध धारा 498-ए व 304-बी भारतीय दण्ड संहिता का आरोप बनना पाते हुए अन्वीक्षा न्यायालय ने आरोप विरचित कर सुनाये व समझाये अभियुक्त-अपीलार्थीगण द्वारा आरोप से इन्कार किया गया तथा अन्वीक्षा चाही।

अभियोजन पक्ष की ओर से अपनी साक्ष्य में 16 साक्षीगण की साक्ष्य लेखबद्ध करायी गयी तथा 19 प्रलेखीय दस्तावेज को सामग्री के रूप में सिद्ध करवाया।

अभियुक्त-अपीलार्थीगण के बयान धारा 313 जाप्ता फौजदारी में लिये गये। अभियुक्तगण की ओर से अभियोजन पक्ष की साक्ष्य को प्रमुख रूप

से गलत होना बताया गया। अभियुक्त-अपीलार्थी प्रभुदयाल ने यह भी विशेष कथन किया है कि जब वह काम पर से लौटा तब उसे पता चला कि सुशीला चक्कर खाकर तख्ते पर से गिर गयी जिस पर वह भागकर गाड़ी लेकर आया तथा सुशीला को इलाज के लिए ले गये उन्होंने दहेज की मांग नहीं की तथा रूपया -नारियल में अपने पुत्र का विवाह किया था।

अभियुक्त-अपीलार्थी मोहन लाल ने भी यही विशेष कथन किया कि वह अपनी पत्नी को प्रसन्नता से रखता था, उन दोनों के मध्य कोई विवाद नहीं था और न ही उसने कभी दहेज की मांग की रूपया-नारियल से शादी हुई थी। अभियुक्त-अपीलार्थिया श्रीमती पप्पूडी ने भी स्वयं को निर्दोष बताते हुए यही विशेष कथन किया कि सुशीला के मरने के 4-5 माह पूर्व उसके पेट का बड़ा ऑपरेशन हुआ था, जिससे उसे उठने-बैठने में तकलीफ थी तथा उसके पोता-पोती होने वाला था किन्तु सुशीला अचानक मर गयी। उसे चक्कर आते थे, उसने दहेज की मांग नहीं की।

अभियुक्त-अपीलार्थीगण ने अपने प्रतिपरीक्षा में डी.डब्ल्यू.1 नाथू राम को परीक्षित कराया है।

अन्वीक्षा न्यायालय ने उभय पक्ष की साक्ष्य लेखबद्ध कर लिये जाने के बाद दोनों पक्षों को सुना जाकर उपरोक्तानुसार दोषी पाते हुए अभियुक्त-अपीलार्थीगण को दण्डादिष्ट किया, जिसके विरुद्ध यह अपील प्रस्तुत की गयी है।

हमने उभय पक्ष की बहस सुनी तथा पत्रावली पर उपलब्ध सामग्री का सम्यक रूप से अवलोकन किया।

विद्वान अधिवक्ता अभियुक्त-अपीलार्थीगण की ओर से तर्क दिया गया है कि कि मृतका सुशीला का विवाह अपीलार्थी मोहन लाल के साथ हुआ था तथा वह अपने पति व अन्य परिवार के सदस्यों के साथ सुखी जीवन व्यतीत कर रही थी। वह गर्भवती थी व घटना के समय अपने कमरे में लगभग ढाई फीट ऊंचे तख्ते पर लेटकर विश्राम कर रही थी। उस समय घर में मृतका सुशीला की सास श्रीमती पप्पूडी थी, जो दूसरे कमरे में

आराम कर रही थी क्योंकि उसकी कुछ समय पूर्व ही पेट की गंभीर शल्य क्रिया हुई थी तथा घर में छोटे देवर व बच्चे खेल रहे थे। उनका यह भी तर्क रहा है कि सुशीला गर्भवती होने के कारण उसे अचानक उल्टी आयी जिसके कारण उसने तख्ते से झुंककर उल्टी करने का प्रयास किया इस पर स्वयं पर नियंत्रण न रख पाने के कारण वह भोंह के बल गिर गयी जिस पर भोंह पर एक ब्रुज के रूप में हल्की चोट आयी तथा गर्दन के बल गिरने के कारण दबाव पड़ने के कारण सर्वाइकल का अस्थि भंग हो गया जिसके कारण उसकी मृत्यु हो गयी। उनका यह भी तर्क रहा है कि अपीलार्थी प्रभु बाहर से काम करके जब घर आया व उसे पता लगते ही वह दौड़कर गाड़ी लाने गया तथा सुशीला को गाड़ी में लिटाकर तुरन्त अस्पताल ले गया, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। उनका इस संदर्भ में यह तर्क रहा है कि डा० राहुल सैनी पी.डब्लू.2, जिनके द्वारा मृतका का शव परीक्षण किया गया था ने मृतका के शरीर पर केवल एक ही बाह्य चोट दाहिनी भोंह पर नीलगू के रूप में पायी तथा मृत्यु का कारण सर्वाइकल वर्टीबा का अस्थि भंग होना बताया। डॉक्टर ने यह भी स्वीकार किया कि कोई व्यक्ति दो फीट की ऊंचाई से गिरे तो मृतका के शरीर पर पायी गयी चोट आ सकती है, इससे भी स्पष्ट है कि मृतका की मृत्यु अचानक गर्भावस्था में उल्टी आने व नीचे झुंकने में अचानक अपने ऊपर नियंत्रण न रख पाने के कारण व शारीरिक कमजोरी के कारण भोंह के बल गिर जाने से हुई थी। जिसकी पुष्टि अभियोजन पक्ष की साक्षी पी.डब्लू.12 शान्ति के बयानों से भी हो रही है जो घटना के थोड़ी देर पूर्व ही सुशीला से मिलकर गयी थी। उनका यह भी तर्क है कि मृतका के पीहर पक्ष के लोगों द्वारा सुशीला की मृत्यु के बाद ही दहेज की मांग करने के सामान्य अनर्गल आरोप लगा दिये हैं जबकि इसमें कोई सच्चाई नहीं है। सुशीला के पिता पी.डब्लू.5 राम लाल व माता पी.डब्लू.6 गौरा के बयानों से ही स्पष्ट है कि विवाह के बाद कोई रूपया या दहेज का सामान कभी भी नहीं दिया गया तथा विवाह भी सामान्य प्रकृति का हुआ था। सुशीला राजी खुशी पीहर मिलने आती थी तथा राजी खुशी ही चली जाती थी तथा उनके द्वारा सुशीला की मृत्यु से पूर्व कभी भी किसी व्यक्ति से अभियुक्तगण द्वारा दहेज की मांग करने के संदर्भ में कोई शिकायत भी नहीं की गयी थी। उनका यह भी तर्क रहा है कि मृतका के पीहर पक्ष के साक्षीगण पी.डब्लू.7 बरजी व पी.डब्लू.8 माया के बयानों से भी इस बात की पुष्टि हो रही है कि सुशीला अपने ससुराल में अपने पति के साथ सुखी

जीवन जी रही थी।

विद्वान लोक अभियोजक का तर्क रहा है कि मृतका सुशीला की मृत्यु उसके विवाह के दो वर्ष की अवधि में संदेहजनक परिस्थितियों में हो गयी थी। अभियोजन पक्ष के साक्षीगण की साक्ष्य से यह बात स्पष्ट है कि अभियुक्तगण द्वारा विवाह के कुछ समय बाद से ही मृतका को दहेज की मांग को लेकर तंग व परेशान करना प्रारम्भ कर दिया गया तथा इसी क्रूरतापूर्ण व्यवहार का परिणाम सुशीला की मृत्यु है तथा धारा 113-बी साक्ष्य अधिनियम में ऐसी परिस्थितियों में अभियुक्तगण के विरुद्ध दहेज हत्या की उपधारणा लेने का भी प्रावधान है तथा अन्वीक्षा न्यायालय द्वारा साक्ष्य का सम्यक रूप से विश्लेषण करने के उपरान्त सही निष्कर्ष निकाला गया है।

हमने उभय पक्ष के तर्कों पर मनन किया।

इस सम्बन्ध में कोई विवाद नहीं है कि मृतका सुशीला का विवाह अपीलार्थी मोहन लाल के साथ हुआ था तथा सुशीला की उसके विवाह के 7 वर्ष की अवधि में ही मृत्यु हो गयी थी।

इस मामले में आयी साक्ष्य व परिस्थितियों पर विचार करने से पूर्व धारा 304-बी भारतीय दण्ड संहिता के प्रावधानों पर आवश्यक दृष्टिपात करना उपयुक्त होगा:

धारा 304-बी Dowry death- "Where the death of a woman is caused by any burns of bodily injury or occurs otherwise than under normal circumstances within seven year of her marriage and it is shown that soon before her death she was subjected to cruelty or harassment by her husband or any relative or her husband for, or in connection with, any demand for dowry, such death shall be called ' dowry death', and such husband or relative shall be deemed to have caused her death."

उपरोक्त प्रावधानों से यह स्पष्ट है कि दहेज हत्या को सिद्ध करने के लिए निम्न तत्वों की सिद्धि की आवश्यकता होती है

1. किसी महिला की मृत्यु जलने, शरीरिक चोटों से या सामान्य परिस्थितियों अथवा दुर्घटना से अलग अन्य प्रकार से हुई है,
2. ऐसी मृत्यु महिला के विवाह के सात वर्ष की अवधि में हुई है,
3. ऐसी महिला को उसके पति व पति के अन्य सम्बन्धियों द्वारा सताया गया या क्रूरतापूर्ण व्यवहार किया गया,
4. ऐसा क्रूरतापूर्ण व्यवहार दहेज कीमांग को लेकर अथवा उसके संदर्भ में किया गया,
5. दहेज की मांग को लेकर क्रूरता पूर्ण व्यवहार महिला की मृत्यु के तुरन्त पूर्व किया गया।

दहेज हत्या के मामले में धारा 113-बी साक्ष्य अधिनियम के प्रावधान भी सुसंगत है, जो निम्न प्रकार है:

" 113-B. Presumption as to dowry death.- When the question is whether a person has committed the dowry death of a woman and it is shown that soon before her death such woman has been subjected by such person to cruelty or harassment for, or in connection with, any demand for dowry, the court shall presume that such person had caused the dowry death."

Explanation- For the purposes of this section 'dowry death' shall have the same meaning as in S. 304-B of the Indian Penal Code (45 of 1860)

इस तरह धारा 304-बी भारतीय दण्ड संहिता व धारा 113-बी साक्ष्य अधिनियम के संयुक्त अध्ययन से यह स्थिति उभरकर आ रही है कि यदि किसी महिला को मृत्यु के तुरन्त पूर्व उसके पति या पति के अन्य सम्बन्धियों द्वारा तंग, परेशान अथवा उसके साथ क्रूरता पूर्ण व्यवहार, दहेज की मांग को लेकर किया तथा ऐसी महिला की मृत्यु उसके विवाह के 7 वर्ष की अवधि में सामान्य मृत्यु अथवा दुर्घटना से हुई मृत्यु से अन्यथा संदिग्ध परिस्थितियों में हुई तो यह विधिक उपधारणा ली जावेगी कि ऐसी मृत्यु दहेज हत्या के रूप में कारित की गयी है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि मृत्यु के तुरन्त पूर्व मृतका के साथ की गयी क्रूरता के लिए कोई निश्चित समय सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती क्योंकि यह तो प्रत्येक मामले की परिस्थितियों पर निर्भर करता है कि ऐसा क्रूरता पूर्ण व्यवहार का प्रभाव मृतका पर कितनी अवधि तक रहता है। माननीय उच्चतम न्यायालय ने विनिर्णय हीरा लाल बनाम देहली राज्य ए आई आर 2003 एस सी पेज- 2865 में भी यही मत व्यक्त किया है:

"The expression 'soon before her death' used in the substantive S. 304-B I.P.C. and S.113-B of the Evidence Act is present with the idea of proximity test. No definite period has been indicated and the expression 'soon before is not defined.'

इस मामले में जहां तक सुशीला की मृत्यु के कारणों का प्रश्न है, डॉ० राहुल पी.डब्लू. 2 की साक्ष्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, जिसके द्वारा सुशीला के शव पोस्ट मार्टम कर रिपोर्ट प्रदर्श पी-2 तैयार की गयी है। डॉ० राहुल के अनुसार मृतका सुशीला के शरीर पर बाह्य चोट के रूप में केवल

एक चोट 2X2 से.मी. नीलगू निशान के रूप में बांयी भौंह पर आना पायी गयी थी। मृतका के सी-सेवन स्तर पर सर्वाइकल वर्टीबा फ्रेक्चर पाया गया। गर्दन को खोलने पर भीतरी स्थिति देखने पर स्पाइनल कोर्ड पर ब्रुज था और हड्डी फ्रेक्चर्ड और डिसलोकेटेड थी। डा० राहुल सैनी के अनुसार मृत्यु का कारण गले की हड्डी में सर्वाइकल सात लेवल पर हड्डी का फ्रेक्चर व डिसलोकेशन वजह से स्पाइनल कोर्ड में चोट होना था।

डा० सैनी द्वारा प्रतिपरीक्षण में यह भी राय व्यक्त की गयी है कि यदि कोई व्यक्ति दो फीट की ऊंचाई से गिरे तो भी यह चोट आ सकती है तथा यह भी स्वीकार किया है कि जो महिला गर्भवती हो तो उसको उल्टियां आ सकती है। डा० राहुल के अनुसार मृतका 8-10 हफ्तो की गर्भवती थी।

डा० राहुल के बयानो से यह स्पष्ट हो रहा है कि मृतका सुशीला के गर्दन व रीड की हड्डी में कोई बाह्य चोट आना नहीं पायी गयी थी। इसी क्रम में अभियोजन साक्षी पी.डब्लू.12 शान्ति की साक्ष्य भी महत्वपूर्ण है, जो कि मृतका की चाची सास थी, जिसने यह कथन किया है कि वह मोहन व सुशीला को राजी खुशी देखती थी। मोहन, सुशीला को अच्छी तरह से रखता था। सुशीला का पेट दुखता था, उसे उल्टी हो गयी थी। वह तीन बजे सुशीला के पास गयी थी तब उसने बताया था कि उसे चक्कर आ रहे हैं और उल्टी हो रही है फिर वह तो वापस आ गयी थी। शाम को बच्चो ने बताया कि सुशीला खाट पर से गिर गयी, उसे इलाज के लिए चौमू लेकरगये थे। अपने प्रतिपरीक्षण में पुनः यही कथन किया है कि सुशीला को ससुराल में सास-ससुर बेटी की तरह मानते थे तथा सुशीला, मोहन के छोटे भाई बहिनो के साथ खेलती रहती थी तथा राजी खुशी रहती थी।

अनुसंधान अधिकारी पी.डब्लू.16 श्री विधाधर सिंह ने भी अपने प्रतिपरीक्षण में यह स्वीकार किया है कि मृतका के कमरे में जिसमें उसका मरना कहा जाता है, मृतका के उल्टी करने के अलामात मौजूद थे, जिससे वे संतुष्ट थे कि मृत्यु से पहले मृतका ने वहां उल्टी की थी।

जहां तक अभियुक्तगण द्वारा मृतका के साथ दहेज की मांग

करने व उसे तंग एवं परेशान करने एवं क्रूरतापूर्ण व्यवहार करने का प्रश्न है, इस सम्बन्ध में अभियोजन पक्ष की ओर से प्रमुख रूप से मृतका सुशीला के पीहर पक्ष के ही व्यक्तियों पी.डब्लू.1 हनुमान सहाय , पी.डब्लू.3 नानूराम , पी.डब्लू.4 धन्ना राम , जो मृतका के भाई हैं, पी.डब्लू.5 राम लाल, पी.डब्लू.6 गौरा, जो कि मृतका के क्रमशः पिता व माता हैं, पी.डब्लू.7 बरजी व पी.डब्लू.8 श्रीमती माया, जो मृतका की भाभियां हैं तथा अन्य सम्बन्धी पी.डब्लू.9 सीताराम के बयान करवाये गये हैं, जिन्होंने सामान्य रूप से आरोप लगाते हुए यह सामान्य कथन किया है कि अभियुक्तगण, सुशीला को रंगीन टेलीवीजन , अलमारी व अच्छे कपड़े की मांग करते हुए उसे तंग व परेशान करते थे। जब सुशीला उनके यहां आती थी तब वह इसकी शिकायत भी करती थी लेकिन इन साक्षीगण की साक्ष्य में दहेज की मांग करने व सुशीला को तंग व परेशान करने के संदर्भ में महत्वपूर्ण विरोधाभास व विसंगतियां आयी हैं। उनकी साक्ष्य से यह भी स्पष्ट हो रहा है कि सुशीला की मृत्यु से पूर्व उनके द्वारा सुशीला को दहेज की मांग को लेकर तंग व परेशान करने की शिकायत किसी अन्य व्यक्ति से नहीं की गयी जबकि सुशीला का विवाह तय करवाने में उनके निकट सम्बन्धी गणेश जी कुमावत भी थे।

इस संदर्भ में सुशीला के पिता राम लाल की साक्ष्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। जिसने यह स्वीकार किया है कि उसने कभी भी इस संदर्भ में सुशीला के ससुराल वालों से दहेज की बाबत कोई बात नहीं की। प्रतिपरीक्षण में इस साक्षीगण ने यह भी कथन किया है कि शादी शान्ति से हुई थी तथा शादी के बाद सुशीला ससुराल चली गयी तथा छः माह बाद वापस आयी तथा फिर एक दिन रुककर वापस चली गयी। वह शादी के बाद लड़की के ससुराल नहीं गया तथा न ही लड़की के सास-ससुर से उसकी कोई बात हुई। इस साक्षीगण ने यह भी स्वीकार किया है कि लड़की राजी राजी चली जाती थी तथा राजी राजी आ जाती थी। शादी के समय जो कुछ दिया, वह दिया उसके बाद कुछ नहीं दिया। राम लाल ने अपने बयानों में यह भी स्वीकार किया है कि यह शादी गणेश कुमावत की मध्यस्थता से हुई थी लेकिन वह दहेज की मांग शुरू होने से पहले ही मर गया। आगे यह भी कथन किया है कि गणेश लड़की के मरने के 15 दिन पहले खत्म हो गया था। गणेश मरा तब तक सब राजी खुशी चल रहा था।

मृतका सुशीला के पिता राम लाल के उपरोक्त कथनों से ही यह स्पष्ट है कि विवाह के कुछ समय बाद से ही जो दहेज की मांग को लेकर सुशीला को तंग व परेशान करने का आरोप लगाया गया है, उसमें कोई सच्चाई नहीं है क्योंकि राम लाल के अनुसार उसकी लड़की सुशीला के मरने के 15 दिन पहले तक गणेश जीवित था तब तक कोई दहेज की मांग ही नहीं थी तथा सब कुछ राजी खुशी चल रहा था।

मृतका सुशीला की माता पी.डब्लू.6 गौरा ने भी यह कथन किया है कि सुशीला की शादी गणेश ने करवायी थी, जो उसकी मौसी का बेटा था तथा वह उनके गांव आते जाते थे। गणेश, सुशीला के मरने से 15 दिन पहले मर गया था। गणेश से इस मामले में उन्होंने कोई बात नहीं की और न ही गणेश ने इस मामले में हमसे कोई बात की। इस साक्षी ने यह भी कथन किया है कि सुशीला के साथ जो कुछ भी होता था तो वह किसी को नहीं कहती थी तथा आपस में भी बात नहीं करते थे। गौरा ने यह स्वीकार किया है कि शादी के समय दहेज की मांग नहीं थी तथा वह राजी खुशी विदा हो गयी थी। इस साक्षी ने यह भी कथन किया है कि उसकी, सुशीला के सास-ससुर वगैहरा से कोई बात नहीं हुई तथा उन्होंने भी हमसे कोई बात नहीं की।

यदि दहेज की मांग को लेकर सुशीला के ससुराल पक्ष के द्वारा तंग व परेशान एवं मारपीट की गयी होती तो निश्चित रूप से उसके माता-पिता शान्त होकर बैठने वाले नहीं थे अपितु वे अवश्य ही इस सम्बन्ध में सुशीला के ससुराल पक्ष के व्यक्तियों से बात करते एवं अपने सम्बन्धियों व समाज के प्रभावशाली व्यक्तियों से भी सम्पर्क करते।

पी.डब्लू.7बरजी भी इस मामले की महत्वपूर्ण गवाह है, जिसने यह कथन किया है कि उसकी छोटी ननद सुशीला विवाह के बाद दो ही बार पीहर आयी थी। जब वह आती थी तो सभी से बातें करती थी। सुशीला ने अपनी सास पप्पूड़ी की भी मृत्यु से पूर्व तक काफी सेवा की थी, जिसका दो-ढाई माह पूर्व ही पेट का बड़ा ऑपरेशन हुआ था तथा वह उस ऑपरेशन के कारण आराम ही करती थी। इस साक्षी ने यह भी कथन किया है कि सुशीला की सास का ऑपरेशन होने के 5-6 महीने पहले से ही सुशीला अपने

ससुराल में ही रह रही थी। बरजी पी.डब्लू.7 ने यह भी स्वीकार किया है कि बयान देने के लिए न्यायालय में वह, गौरा, माया, नानू, रामू सब साथ-साथ आये थे तथा सबने सलाह मशवरा कर लिया था कि क्या बयान देना है। जब वह बयान देने आयी तब उन्हें नीचे भी सारी बातें समझा दी गयी थी कि क्या बयान देना है।

न्यायालय में बयान देने आने से पूर्व उन्हें सिखाने पढ़ाने का ऐसा ही कथन पी.डब्लू.8 श्रीमती माया ने भी किया है।

इससे यह भी स्पष्ट है कि इन साक्षीगण की साक्ष्य स्वतंत्र नहीं है अपितु सिखाये जाने के अनुरूप ही उन्होंने दहेज इत्यादि की मांग का आरोप लगाते हुए बयान दिये हैं।

श्रीमती माया पी.डब्लू.8 ने भी यह स्वीकार किया है कि उसकी ननद सुशीला जब उनके यहां आती थी, तब एक आध दिन रुककर जाती थी तथा राजी खुशी जाती थी। सुशीला घर में अकेली थी तथा उसकी सास का ऑपरेशन हुआ था तथा घर का सारा काम उसे ही करना पड़ता था। इस साक्षी ने यह भी स्वीकार किया है कि उनकी रंगीन टी वी देने की हिम्मत नहीं थी तथा सुशीला ने भी अपने पीहर वालों को कोई बात नहीं बतायी थी तथा यह भी स्वीकार किया है कि सुशीला के ससुराल में उसके देवर, ननद सब राजी खुशी रहते थे व सुशीला पर उसके ससुराल वालों की कोई रोक नहीं थी। सुशीला मरने के पहले मोहन के साथ जाती थी तथा उसके साथ ही वापस आ जाती थी। इस साक्षी ने यह भी स्वीकार किया है कि सुशीला अपने ससुराल में मोहन के साथ पति-पत्नी के रूप में राजी खुशी रहती थी।

अभियोजन पक्ष की ओर से पी.डब्लू. 9 सीताराम जो मृतका सुशीला का भाई है, प्रस्तुत हुआ है लेकिन उसे तो यह भी ज्ञात नहीं है कि अपनी बहिन को सगाई में कितना रूपया दिया था, सुशीला शादी के बाद पीहर कितने दिन बाद आयी थी तथा यह भी बताने में असमर्थता व्यक्त की है कि शादी के अलावा अन्य कोई सामान दहेज वगैरा दिया गया था अथवा नहीं दिया गया था। मरने से एक माह पूर्व भी सुशीला अपने पीहर आयी थी, इस सम्बन्ध में भी इस साक्षी ने अनभिज्ञता प्रकट की है तथा

सामान्य रूप से दहेज की मांग करने का कथन कर दिया है।

इसी क्रम में अनुसंधान अधिकारी पी.डब्लू.16 विधाधर सिंह की साक्ष्य भी महत्वपूर्ण है, जिन्होंने यह स्वीकार किया है कि उन्होंने अनुसंधान में राम नाथ, बिरदी चंद, नाथू के बयान लिये थे, जिन्होंने यह बताया था कि उन्होंने दहेज मांगने की बात नहीं सुनी। नाथू ने तो यह भी बताया कि दहेज का कोई झगड़ा नहीं था। अभियोजन पक्ष द्वारा उक्त स्वतंत्र साक्षीगण को इस मामले में प्रस्तुत ही नहीं किया गया है।

इस तरह अभियोजन पक्ष की ओर से साक्ष्य का सम्यक रूप से विश्लेषण करने पर निम्न परिस्थितियां उभरकर सामने आ रही हैं:

1. मृतका सुशीला 8-10 सप्ताह की गर्भवती थी।
2. सुशीला के कमरे में लगभग दो-ढाई फीट का ऊंचा तख्ता था जिस पर वह सोती थी।
3. घटना स्थल पर तख्ते के पास उल्टी करने के अलावा अनुसंधान अधिकारी द्वारा मौके पर पाये गये थे।
4. घटना के कुछ समय पूर्व पी.डब्लू.12 शान्ति, सुशीला से मिलने गयी थी तब सुशीला ने उसे बताया कि उसका पेट दुखता है, उसे चक्कर आ रहे हैं तथा उसे उल्टी भी हो रही है।
5. सुशीला के केवल मात्र एक बाह्य चोट नीलगू निशान बांयी भौंह पर थी तथा उसकी मृत्यु सी-सेवन सर्वाइकल वर्टीबा के फ्रेक्चर व डिसलोकेशन के पास से स्पाइनल कोर्ड में आयी चोट की वजह से थी।
6. सुशीला के गले व रीड की हड्डी अथवा बांयी भौंह के अतिरिक्त शरीर के किसी अन्य भाग पर कोई बाह्य चोट आना नहीं पायी गयी थी।
7. डाक्टर राहुल की राय के अनुसार दो फीट की ऊंचाई

से गिरने पर मृतका के आयी जैसी चोट आना सम्भव थी।

9. मृतका का विवाह शान्ति पूर्वक हुआ था, जिसमें कोई दहेज की मांग नहीं की गयी और न ही मृतका सुशीला के माता-पिता द्वारा विवाह के पश्चात् दहेज के रूप में कोई रुपया अथवा सामान ही कभी दिया।

10. मृतका सुशीला के पिता राम लाल, माता गौरा एवं भाभियां बरजी व माया के बयानों से भी यही ध्वनित हो रहा है कि मृतका सुशीला अपने पति के साथ राजी खुशी अपने ससुराल में रहती थी तथा दहेज की मांग करने अथवा दहेज की मांग को लेकर सुशीला को तंग व परेशान करने के सम्बन्ध में सुशीला के माता-पिता अथवा अन्य परिजनों द्वारा समाज के किसी भी अन्य व्यक्तियों से कभी कोई शिकायत नहीं की गयी।

जैसा कि ऊपर विस्तृत रूप से विवेचन किया जा चुका है तथा साक्ष्य से यह उभरकर सामने आया है कि मृतका सुशीला अपने पति के साथ राजी खुशी अपने ससुराल में रहती थी तथा दहेज की मांग करने अथवा दहेज की मांग को लेकर सुशीला को तंग व परेशान करने के लिए सुशीला के माता-पिता अथवा अन्य परिजनों द्वारा समाज के किसी भी अन्य व्यक्तियों से कभी कोई शिकायत नहीं की।

उपरोक्त साक्ष्य व परिस्थितियों से यह निष्कर्ष निकालने में सहायता मिल रही है कि अभियोजन पक्ष, अभियुक्तगण के विरुद्ध मृतका सुशीला को दहेज की मांग करने व उसके साथ क्रूरतापूर्ण व्यवहार करने की बात को संदेह से परे सिद्ध करने में नितान्त रूप से असफल रहा है साथ ही चिकित्सीय व अन्य परिस्थिति जन्य साक्ष्य से भी यही निष्कर्ष निकाला जाना औचित्यपूर्ण प्रतीत हो रहा है कि मृतका सुशीला की मृत्यु किसी मारपीट या क्रूरतापूर्ण व्यवहार का परिणाम नहीं थी अपितु गर्भावस्था में अचानक चक्कर व उल्टी आने व झुंककर उल्टी करने के प्रक्रम में सिर के एक भाग के बल गिर जाने से बांयी भौंह पर चोट व कम्प्रेसन के कारण

सर्वाइकल वर्टीबा का अस्थि भग हुआ, जो सुशीला की मृत्यु का कारण बना।

उपरोक्त समस्त विवेचन एवं विश्लेषण के आधार पर अभियुक्त-अपीलार्थीगण की अपील स्वीकार किये जाने योग्य है तथा उनकी दोष सिद्धी का निर्णय अपास्त होने योग्य है।

परिणामतः अभियुक्त-अपीलार्थीगण प्रभु दयाल, मोहन लाल, श्रीमती पप्पूडी की अपील स्वीकार की जाकर अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश, (फास्ट ट्रेक) जयपुर जिला- जयपुर द्वारा सेशन केस संख्या 34/2002 (12/2001) में पारित आक्षेपित निर्णय एवं दण्डादेश दिनांक 13.2.2003 को अपास्त किया जाता है। अभियुक्त-अपीलार्थीगण को धारा 498-ए व 304-बी भारतीय दण्ड संहिता के अपराध की दोष सिद्धी से बरी किया जाता है।

अभियुक्त-अपीलार्थीगण यदि किसी अन्य प्रकरण में वांछित न हो तो उन्हें इस मामले में तुरन्त रिहा कर दिया जावे।

(न्या० जितेन्द्र राय गोयल)